CHETANA
INTERNATIONAL JOURNAL OF EDUCATION (CIJE)
Peer Reviewed/Refereed Journal
(ISSN: 2455-8729 (E) / 2231-3613 (P))
Impact Factor
SJIF 2023 - 7.286

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

First draft received: 12.06.2023, Reviewed: 18.06.2023, Accepted: 26.06.2023, Final proof received: 30.06.2023

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'और मिर्ज़ा ग़ालिब की तुलना(त्रासदीय विषयक् परिप्रेक्ष्य में)

डॉ प्रणु शुक्ला
सहायक आचार्य हिंदी
राजकीय कन्या महाविद्यालय, चौमूं, जयपुर, राजस्थान
Email-pranu.rc55@gmail.com, Mobile-7597784917

मिर्ज़ा ग़ालिब और सूर्यकांत त्रिपाठी दोनों लगभग एक ही क़श्ती के मुसाफिर है साथ ही साथ अपने जीवन और उस जीवन में घटने वाली त्रासदी के लिए विशेष रूप से प्रसिद्ध है। हम सभी जानते हैं कि मिर्जा गालिब और निराला को अपने जीवन में कुछ भी हासिल नहीं हुआ, यद्यपि दोनों अपने-अपने फन के माहिर थे। मिर्जा गालिब अपने जमाने के शेर, मरसिए,ग़ज़ल के सर्वश्रेष्ठ शायर और सूर्यकांत त्रिपाठी निराला अपने समय के सर्वश्रेष्ठ कवि के रूप में हमारे समक्ष उपस्थित होते हैं लेकिन फिर भी उन लोगों को अपनी जिंदगी से कुछ भी हासिल नहीं हुआ। दरअसल उनकी जिंदगी में इतने दुख, इतनी त्रासदी में व्याप्त थी कि जिसका वर्णन नहीं जा सकता। इस सब के पहले हमें त्रासदी क्या है यह समझना होगा।

मुख्य शब्द : *सर्वश्रेष्ठ शायर, सर्वश्रेष्ठ कवि, फन, माहिर आदि.*

प्रस्तावना

मिर्ज़ा ग़ालिब और सूर्यकांत त्रिपाठी दोनों लगभग एक ही क़श्ती के मुसाफिर है साथ ही साथ अपने जीवन और उस जीवन में घटने वाली त्रासदी के लिए विशेष रूप से प्रसिद्ध है। हम सभी जानते हैं कि मिर्जा गालिब और निराला को अपने जीवन में कुछ भी हासिल नहीं हुआ, यद्यपि दोनों अपने-अपने फन के माहिर थे। मिर्जा गालिब अपने जमाने के शेर, मरसिए,ग़ज़ल के सर्वश्रेष्ठ शायर और सूर्यकांत त्रिपाठी निराला अपने समय के सर्वश्रेष्ठ कवि के रूप में हमारे समक्ष उपस्थित होते हैं लेकिन फिर भी उन लोगों को अपनी जिंदगी से कुछ भी हासिल नहीं हुआ। दरअसल उनकी जिंदगी में इतने दुख, इतनी त्रासदी में व्याप्त थी कि जिसका वर्णन नहीं जा सकता। इस सब के पहले हमें त्रासदी क्या है यह समझना होगा।

(अ)- **त्रासदी का पाश्चात्य परिप्रेक्ष्य**- वास्तव में प्राचीन यूनान में देवता डायनासोर के सम्मान में गाए जाने वाले समूह गीतों से त्रासदी का आरंभिक विकास हुआ तथा यूनान वासियों ने अपने धार्मिक विश्वास में दैवीय शक्ति के उग्र रूप की कल्पना की।"1
केवल गंभीर कार्य की अनुकृति ही त्रासदी है गंभीर कार्य दुखांत होना आवश्यक था लोगों में ऐसा भ्रम था किंतु अरस्तु के आगमन से त्रासदी यह तत्व और उसके ढांचे में आमूलचूल परिवर्तन आया त्रासदी का पक्ष इतना सफल हो गया कि वह महाकाव्य के बराबर ही नहीं बल्कि उससे बड़ी मानी गई उसने स्पष्ट किया कि त्रासदी दुखांत ही नहीं वरन सुखांत भी होती है। इस प्रकार त्रासदी किसी भी काव्य तत्व का मूल अंग होती है क्योंकि काव्य की उत्पत्ति में उसके विस्तार में त्रासदी समाविष्ट रहती है तथा काव्य का रूप सुखांत भी हो सकता है और दुखांत भी त्रासदी गंभीर कार्य की अनुकृति होती है और वह गंभीर कार्य वह जो महत्वपूर्ण है वही त्रासदी के गौरव के अनुकूल है।

(ब)-त्रासदी का भारतीय परिप्रेक्ष्य- साहित्य पर किसी एक देश का अधिकार नहीं होता वह विश्व जमीन ही नहीं सार्वभौम होता है किसी

एक देश की स्थाई धरोहर नहीं हो सकता ठीक इसी प्रकार त्रासदी की संकल्पना यूनान में आई और प्राचीन यूनान में काव्य की श्रेष्ठ विधा के रूप में त्रासदी का विकास हुआ परंतु यूनान में त्रासदी के सुखांत और दुकान तो दो रूप प्रचलित थे परंतु भारतीय काव्य में त्रासदी का केवल सुखांत रूप में चित्रित हुआ है यह सत्य है कि हिंदी नाटकों और हिंदी काव्य में त्रासदी संस्कृत नाटकों की ही देन है किंतु त्रासदी के बिना किसी भी महाकाव्य रचना की तीसरी नहीं होती बल्कि त्रासदी के बिना वह चरम तत्व को प्राप्त नहीं करता जिस तरह किसी भी काव्य में करुण रस विषयक तत्व पड़ने पर दर्शक यशोदा के मन में रसोद ब्रेक होता है और उसकी चरम परिणति भोक्ता के अश्रु बहने के रूप में होती है त्रासदी की मौलिक उदभावनाएं यही है हम त्रासदी तत्व को प्राय दुखांत अवस्था मानते हैं लेकिन यह भ्रम पूर्ण स्थिति है त्रासदी का लक्ष्य मात्र दुकान पर चित्रित करना नहीं वरन जीवन के समस्त कार्य व्यापार ओं का चित्रण करना है इससे

काव्य में जीवंतता आती है। यह निर्विवाद सत्य है कि हिंदी साहित्य से हिंदी साहित्य में त्रासदी का आविर्भाव संस्कृत नाटकों से और संस्कृत काव्य से हुआ है लेकिन फिर भी आधुनिक काल तक आते-आते निराला और महादेवी ने करुणा को अपनी कविताओं में साकार किया है निराला ने त्रासदी को मानवीकृत करते हुए साकार रूप प्रदान किया है। वे राग और विराट के अध्येता थे उन्होंने मैथ की आवरण में सामाजिक यथार्थ ओं का उद्घाटन किया उन्होंने सरोज स्मृति और निराला जैसी कविताएं लिखीं।

धिक् जीवन जो पाता आया ही विरोध,
धिक् साधन जिसके लिए सदा ही किया शोध।।"2

ठीक इसी तरह उर्दू और फारसी के शायर मिर्जा गालिब के जीवन में भी त्रासदी की झलक हम देखते हैं। हिंदी के कवि निराला की त्रासदी की तुलना यदि किसी व्यक्तित्व की त्रासदी की तुलना से हो सकती है तो वह मिर्जा गालिब ही हैं अन्यथा कोई नहीं।कोई व्यक्ति अपने आप में पूर्ण नहीं होता लेकिन फिर भी व्यक्ति को अपने जीवन जीने के लिए कुछ मूलभूत आवश्यकताओं की जरूरत होती है। यदि यह मूलभूत आवश्यकताएं भी पूरी नहीं की जा सकती हो तो व्यक्ति का जीवन दुखों से घिर जाता है। मिर्जा गालिब और निराला के जिंदगी में अपनों की मृत्यु से उत्पन्न आघात और अपने बच्चों और प्रिय जनों का शनै शनै कालकवलित होने ने उनके काव्य को वेदना और त्रासदी से परिपूर्ण कर दिया। दरअसल यह शायर और कवि ऐसे थे जिन्होंने जो कुछ नस नाडी में भोगा वही लिखा, जहां मिर्जा गालिब लिखते हैं-

ना गुले नगमा हूं न पर्दे ए साज़।
मैं हूं खुद अपनी शिकस्त की आवाज।।"3

ठीक उसी तरह निराला ने लिखा-

दुख ही जीवन की कथा रही।
क्या कहूं, आज जो नहीं कही कहीं ना कही।।"4

इन दोनों कवियों में त्रासदी विषयक परिप्रेक्ष्य को लेकर तुलना की जा सकती है स्वयं निराला तो करुणा के अवतार थे ही और मिर्जा गालिब ने अपनी जिंदगी में कुछ भी हासिल नहीं किया लेकिन इन सबके बावजूद इन दोनों की प्रशंसा इस बात में है कि कितने भी दुख इन पर पड़े हों, कितनी भी इनकी प्रिय जनों की मृत्यु हो गई हो, लेकिन फिर भी बार-बार यह समाज के सामने एक नए रूप में आते हैं और वह रूप है इनकी अस्मिता की घोषणा, इन की स्वायत्तता की पहचान। यह गिड़गिड़ाते रोते हुए नहीं आते हैं, बल्कि जीवन को एक नए जोश के साथ जीने की प्रेरणा देने के लिए काव्य की रचना करते हैं। निराला सच्चे अर्थों में महाप्राण कवि थे, उनको महाप्राण सिर्फ इसलिए नहीं कहा जाता कि उन्होंने जो कुछ भी रचा वह सर्वश्रेष्ठ रचा। लेकिन उन्हें महाप्राण सिर्फ इन अर्थों में कहा जाता है कि जिन परिस्थितियों में उन्होंने सर्वश्रेष्ठ रचा, उन परिस्थितियों में, उस त्रासदी में कोई भी कवि ही नहीं वरन मनुष्य भी जीवित नहीं रह सकता। 'धर्मवीर भारती' मैं अपने पत्रों में निराला की भयावह दशा का जिक्र किया है कि एक बार धर्मवीर भारती निराला से मिलने गए तो निराला उन्हें चाय पिलाने पर आमादा हो गए। चूल्हे पर चाय चढ़ा दी गई काली चाय को हटाने के लिए गरम-गरम चूल्हे से उतारने के लिए किसी वस्त्र की आवश्यकता महसूस हुई तो धर्मवीर भारती लिखते हैं सिवाय निराला के पहने हुए गमछे के अतिरिक्त उस कमरे में और कोई भी वस्त्र न था। जब निराला अपने हाथों से उसे उतारने लगे तो धर्मवीर भारती ने कहा अरे दादा हाथ जल जाएंगे। निराला ने बड़े

सहज शब्दों में इस बात का उत्तर दिया अरे भारती सब कुछ तो जल चुका है, दिल जल चुका है फिर बचा ही क्या है।"शायद इसीलिए धर्मवीर भारती ने निराला की तुलना पृथ्वी पर गंगा उतार कर लाने वाले भगीरथ से की थी। उन्होंने लिखा है, “भगीरथ अपने पूर्वजों के लिए गंगा लेकर आए थे; निराला अपनी उत्तर-पीढ़ी के लिए!”5

आप उस करुणा का उस त्रासदी का अंदाजा लगा सकते हैं जिन शब्दों में निराला ने यह बात कही थी-

जनता के हृदय जिया
जीवन विष विषम पिया।।"6

ठीक उसी तरह मिर्जा गालिब को जब नवाब जान कहती है कि आप क्यों पेंशन के लिए मारे मारे फिरते हैं, जाइए कहीं अपनी ग़ज़ल या ग़ज़ल का मतलब भेज दीजिए। आप तो यूं ही यूं ही लखपति हो जाएंगे, बेकार में फाका किया करते हैं। मिर्जा गालिब ने उत्तर दिया मेरे शेर बेचने के लिए नहीं है नवाब जान! अगर मैं भूखा न मरता तो ऐसे शेर न लिखता, यह शेर नहीं है वरन मेरी मुफलिसी की पहचान है।ग़ालिब की ज़िंदगी की तरह एक खास तरह के उदात्त भाव और करुणा ने उनके अनुभवों को ऐसे मानवीय तजुर्बे में बदल

दिया, जिससे कोई भी व्यक्ति अपना निजी रिश्ता महसूस कर सकता था।निराला का दुःख उनके जीवन के परिवेश से संघर्ष की प्रक्रिया में पनपा था.

निराला इसी संघर्ष के कवि थे. उनका काव्य इसी संघर्ष का प्रतिफल था। 'डॉ रामविलास शर्मा' ने निराला पर लिखा था-

'काव्य की श्रेष्ठता उसके ट्रैजिक होने में है, पैथेटिक होने में नहीं। जहां संघर्ष है, परिवेश का विरोध सशक्त है, उससे टक्कर लेने वाले व्यक्ति का मनोबल दृढ़ है, वहां उदात्त स्तर पर मानव-करुणा व्यक्त होती है। वही ट्रैजडी है. शेष सब पैथेटिक है-"7

अमिय गरल शशि सीकर रविकर राग-विराग भरा प्याला
पीते हैं, जो साधक उनका प्यारा है यह मतवाला।।"8

निराला की अपने परिवेश से टक्कर अपने समय की प्रचलित पुरानी काव्यगत रूढ़ियों से हुई। उनकी रचनाओं को पुराने साहित्य के मीमांसक अपनी प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में छापने से मना कर देते। उनके खिलाफ मुहिम चलाकर अपमानित करते। निराला ने अपनी इकलौती बेटी के गुजर जाने पर शोक-गीत लिखा तो यह दर्द भी छुपा न पाए।रचना के लौटने का दर्द इकलौती बेटी के निधन से जुड़कर फूट पड़ा-

लौटी रचना लेकर उदास
ताकता हुआ मैं दिशाकाश"9

'दिशाकाश ताकते' निराला की दृष्टि केवल निज जीवन की पीड़ा तक रही होती तो वह 'महाप्राण' न कहे गए होते, लेकिन 'दिशाकाश' के परे उन्होंने कुछ ऐसा देखा और ऐसी गहरी करुणा और तड़प से देखा जिस पर उनके किसी समकालीन की नजर नहीं पड़ी थी!

यही उनके 'महाप्राण' होने का राज था. उन्होंने ऐसा क्या देखा था! उन्होंने देखा,

जिन्होंने ठोकरें खाईं गरीबी में पड़े, उनके
हजारों-हा-हजारों-हाथ के उठते समर देखे
गगन की ताकतें सोयीं, जहां की हसरतें सोयीं
निकलते प्राण बुलबुल के बगीचे में अगर देखे।।10

इतना होने पर भी उनकी प्रगतिशीलता का वह आलम देखिए कि जब लोगों ने उनके घरों से पानी पीना भी बंद कर दिया हो, अपने घर से कुछ लेना देना भी बंद कर दिया हो, एक तरह से उन्हें सामाजिक बहिष्कृत कर दिया हो फिर भी वह आदमी अपनी समस्त चेतना को इकट्ठा कर समाज के उस गरीब तबके के लिए काम कर रहा है जो शायद किसी की नजर में नहीं। उनकी कविता का एक यह तेवर देखिए-

जल्द-जल्द पैर बढ़ाओ, आओ आओ
आज अमीरों की हवेली
किसानों की होगी पाठशाला
धोबी, पासी, चमार, तेली
खोलेंगे अंधेरे का ताला
एक पाठ पढ़ेंगे, टाट बिछाओ।"11

यही वेदना का प्राकट्य हम मिर्ज़ा ग़ालिब में भी अक्षरशः देखते हैं-

रहिये अब ऐसी जगह चलकर जहां कोई न हो
हम-सुखन कोई न हो और हमजुबां कोई न हो'।"12

दैनिक जिंदगी और बढ़ती त्रासदी यों के कारण मिर्जा गालिब भी इतने प्रताड़ित हो गए थे कि उन्हें लगता था कि वे कहीं और जाकर रहे क्योंकि बढ़ते कर्जे का बोझ और लगभग खत्म होते आय के स्रोत ना मिलने वाली पेंशन से उनकी जिंदगी में दुखों का समुद्र गहरा रहा था। उस पर एक के बाद एक लगातार सात बच्चों की मृत्यु ने उन्हें तोड़ सा दिया था और जिस भतीजे को उन्होंने गोद लिया, वह भी मृत्यु को प्राप्त हुआ तथा कुछ समय बाद उनकी बेगम भी जाती रही। यह सभी कष्ट उनकी जिंदगी में शुमार ही थे। धीरे धीरे फाका मस्ती का वह शायर दुखों की गोद में आकर समाने लगा। वो लिखते हैं -

मुश्किल है मुझ पर इतनी पड़ी की आसां हो गई।"13

उन पर जिंदगी का इतने इतने कर दे उधार थे कि मैं कभी अपना घर भी ना ले पाए, सदा किराए के मकान में ही रहे। लोहारू के नवाब की बेगम जो उनकी बीवी थी उसे गहना भी ना दिला पाए और तो और जो बच्चे उन्होंने पैदा किए वे उन्हें भी ना बचा पाए। तभी तो वे लिखते हैं-

आह को चाहिए इक उम्र असर होने तक
कौन जीता है तेरी जुल्फ के सर होने तक
हमको मालूम है तगाफुल न करोगे लेकिन
खाक हो जाएंगे हम तुमको ख़बर होने तक।।"14

या फिर-

हज़ारों ख़्वाहिशें ऐसी कि, हर ख़्वाहिश पे दम निकले,
बहुत निकले मेरे अरमां, लेकिन फिर भी कम निकले...
निकलना ख़ुल्द से आदम का, सुनते आए थे लेकिन,
बहुत बेआबरू हो कर, तेरे कूचे से हम निकले...।"15 दरअसल निराला की त्रासदी और ग़ालिब की त्रासदी का संप्रत्यय एक ही है। दोनों को जो मिलना चाहिए था वह नहीं मिला बल्कि जो कुछ भी मिला वह बहुत जरा सा था या कुछ था ही नहीं। जब से अपनी जिंदगी का सर्वश्रेष्ठ दे रहे थे तब उनके पास खाने के लिए दाने नहीं थे ।मुफलिसी की जिंदगी और रहमों करम पर आधारित जीवन। ऐसे में भला त्रासदी के अलावा निकलता भी क्या। दोनों ही अपनी जिंदगी और जिंदगी के आसपास के सरोकारों से बेहद तल्ख थे। अपनी रचना प्रक्रिया के दौरान ग़ालिब और निराला जिन पायदानों से होकर गुजरे थे वह पायदान चरमराए हुए थे और ऐसे में स्वतंत्रता आंदोलन का शंखनाद और इन सरस्वती पुत्रों का हाल बेहाल। सिवा

करुणा के ,तल्खी के, व्यंग्य के देते भी क्या। दोनों ही शायर कवि संवेदना

प्रधान है दोनों ही ने संघर्ष नस नाडी में भोगा हुआ है। दोनों ही ने जो भी जीवन जिया वह उनके लिए अपर्याप्त था। दोनों ही इतने आकुल व्याकुल थे कि एक तो संपादक द्वारा बार-बार लौटा दिए गए और दूसरे 'दबीर उल मुल्क' जैसी तमाम उपाधियों के बावजूद अपना एक दीवान भी छपा न सके। बावजूद इन सब बुराइयों के वे बार-बार उठकर खड़े होते हैं, गिरते हैं, पडते हैं लेकिन फिर भी समाज के सामने लेखन में जो चरित्र साझा करते हैं वह अद्वितीय चरित्र होते हैं। जब निराला यह लिखते हैं-

धिक् जीवन जो सहता आया सदा ही विरोध
धिक् साधन जिसके लिए किया सदा ही शोध

और गालिब कहते हैं-

रोज इस शहर में एक हुक्म नया होता है
कुछ समझ में नहीं आता कि क्या होता है।"16

प्रकारांतर से निराला और मिर्जा गालिब दोनों ही उस भाव भूमि के कवि और शायर हैं जिस भाव भूमि में त्रासदीय तत्व महत्वपूर्ण है उनके यहां संघर्ष महज देखा हुआ संघर्ष नहीं है बल्कि जीवन एक संघर्ष है और संघर्ष भी ऐसा जिसे वे जिंदगी भर देखते आए हैं। महाप्राण निराला और मिर्जा ग़ालिब दोनों ही वेदना के संचय के शायर और कवि हैं। करुणा के भाव के रुधिर धारा से निस्पंद कवि हैं। स्वतंत्रता संग्राम की चेतना के कवि हैं और जागृत जयघोष के कवि हैं। जब वे लिखते हैं-

वह आता, दो टूक कलेजे के करता,
पछताता पथ पर आता।। "17

उस वक्त जो भी उस पाठक उस अंश को पढ़ रहा होगा वह खुद ही समझ जाएगा कि यहां निराला स्वयं अपना वर्णन कर रहे हैं या निराला की 'वह तोड़ती पत्थर देखा उसे

इलाहाबाद के पथ पर' पढ़ी जाए तो भी लगता है कि जैसे करुणा अपने समस्त केंद्रीय भाव को लेकर साकार हो गई हों-

अन्याय जिधर है उधर शक्ति! कहते छल छल।
हो गए नयन, कुछ बूंद, पुनः ढलके दृगजल।।"18

जैसे मिर्जा गालिब को ही लें

जब आंख ही से न टपका तो फिर लहू क्या है,' की जगह अब ग़ालिब यह महसूस करते कि 'खूं हो के जिगर आंख से टपका नहीं ऐ मर्ग, रहने दो अभी यां कि अभी काम बहुत है।"19

क्या ग़ालिब मर्ग से डर गए थे! वो ग़ालिब जो अक्सर तन्हाई में गुनगुनाते कि 'मौत का एक दिन मुअय्यन है, नींद रात भर क्यों नहीं आती.' अधूरी ख्वाहिशों ने ग़ालिब को एहतियात बरतने पर मजबूर कर दिया था.

फिर वज़'-ए-एहतियात से रुकने लगा है दम,
बरसों हुए हैं चाक गरेबां किए हुए।"20

1867 से 1869 के मध्य में मिर्ज़ा ग़ालिब ने रामपुर के नवाब को कई खत लिखे. वह अपना कर्ज चुका कर मरना चाहते थे. 17 नवंबर 1868 को ग़ालिब ने बहुत व्याकुलता से रामपुर के नवाब को लिखा, 'मेरी हालत बद से बदतर हो गई है.आपके दिए हुए 100 रुपये के वजीफे में से मेरे पास बस 54 रुपये बचे हैं, जबकि मुझे अपनी इज्जत को बचाए रखने के लिए करीब 800 रुपयों की जरूरत है.' ग़ालिब ने अपनी मौत से तीन महीने पहले ये खत लिखा था. वह लिए हुए कर्ज के साथ मरना नहीं चाहते थे. उन जैसे कुलीन के लिए इस हालत में मरना बड़ी बे-ग़ैरती की बात थी. 10 जनवरी 1869 को अपनी मौत से करीब एक महीने पहले अपनी अंधेरी सीलन भरी कोठरी से नवाब को आखिरी बार

लिखा, 'हुज़ूर,परवरदिगार ने मुझे तबाही के पास लाकर खड़ा कर दिया है. मैं बस आपको फिर से याद दिलाने का फर्ज अदा कर रहा हूं, बाकी हुजूर की मर्जी.' जो इतने अजीम-ओ शान फन का मालिक था उसे अंत में कुछ चंद रुपयों के लिए बादशाह के आगे हाथ फैलाने को मजबूर होना पड़ा। वास्तव में कुछ तो हमारे समाज ने और कुछ उस वक्त की सरकारों ने, बादशाहो ने, संपादकों ने ऐसे व्यक्तियों की कवियों की शायरों की इज्जत नहीं की। यदि जितना प्यार और सम्मान हम उन्हें मरने के बाद देते हैं उसे आधा भी, आधा क्या चौथाई भी यदि उनके जीवित रहते हम उन्हें दे देते तो वह समाज को अपना और अधिक सर्वश्रेष्ठ दे जाते, वह सर्वश्रेष्ठ जो शायद दिए गए सर्वश्रेष्ठ से बेहतर होता। जो भी हो लिखना एक कला है और कला जीवन के लिए होती है, जो व्यक्ति सच्चे अर्थों में कलाकार होता है, लेखक होता है वह अधिक संवेदनशील होता है, क्योंकि समाज की जिम्मेदारी उस पर बहुत अधिक होती है। इसीलिए वह कवि या लेखक बन पाता है, साहित्यकार बन पाता है। उसका स्वभाव एक विचित्र प्रकार का कारूणिक और संवेदनशील हो जाता है तभी वह समाज का चित्रण यथातथ्य सत्य रूप में या आदर्श रूप में कर पाता है। मिर्जा गालिब और निराला ने जो भी उस वक्त के समाज का चित्रण किया उसमें कहीं ना कहीं समाज के आम तबके की जिजीविषा और संघर्ष की बात हावी रही। मिर्जा गालिब और निराला को जब हम देखते हैं और पढ़ते हैं तो पाते यह दोनों कवि और शायर कतरे कतरे और बूंद-बूंद को सांचे में ढालने की कला रखते हैं, जिंदगी की रवानी रखते हैं संघर्ष और जिजीविषा की कहानी रखते हैं, प्रेम रखते हैं, परित्याग रखते हैं और मृत्यु की तो बात ही क्या। मिर्जा गालिब और निराला दोनों नहीं मृत्यु का जीवंत चित्रण अपने

काव्य में किया है। सरोज स्मृति में पुत्री की याद में लिखने वाला शोक गीत है तो वहीं तुलसीदास और राम की शक्ति पूजा संघर्ष से उठ कर आए हुए व्यक्ति की रवानगी की कहानी कहती है। मिर्जा गालिब के शेरों में आम आदमी को जिंदगी से लड़ने की प्रेरणा दी गई है और प्रेरणा भी ऐसी जो समस्त शक्तियों को एकत्रित कर चोट

पर चोट खाने के बावजूद उस खड़े होने की संवेदना और ललकार हो।

-फिर वज़्र-ए-एहतियात से रुकने लगा है दम,
बरसों हुए हैं चाक गरेबां किए हुए।।"21

रमानाथ सुमन ने लिखा है "पर एक बात में वह औरों से भिन्न था उसे किसी की छाया अधिक दिनों तक नसीब नहीं हुई। उसकी खुशहाली के पीछे यतीमी झाँक रही थी। उसी ने उसको कुछ उत्छृखंल किया। दुनिया के खुले रास्ते पर अकेला छोड़ दिया और उसी ने हथौड़ों की चोट से इसे गढ़ा और तूफानी थपेड़ों से इसके जीवन की गति उत्पन्न की। बचपन में हम देखते हैं कि एक और आराम आसाइश की सब सामग्री प्रस्तुत थी, दूसरी ओर वह अनाथ था- तन से भी और मन से भी। इस सतह पर उसके दुख दर्द की इंतहा नहीं थी यह स्थिति जीवन भर चलती रही और कभी समाप्त नहीं हुई। वह दो बरस का था कि बाप मरा, पाँच का था कि चचा मर गए। बच्चा था और घर में अभाव न था इसलिए यह दर्द कुछ समय के लिए अंदर ही अंदर दब गया, पर यह इसके जीवन का महत्वपूर्ण और स्मरणीय तथ्य है कि पाँच वर्ष की उम्र के बाद इसका कोई सरपरस्त ना रह गया। किसी के आगे झुकने की जरूरत न रही, कोई अनुशासन ना रहा।" हर कठिनाई हर दुख उसे बताता है कि दुनिया कितनी सुंदर कितनी प्राणोन्मादक, कैसी मोहक है, तूफान आते हैं, पैर लड़खड़ा जाते हैं , ग़ालिब दुखी और निराश भी होता है पर वह दुनिया का तिरस्कार नहीं करता। उस में दुनिया के प्रति घृणा नहीं एक अटूट लगाव है। इसलिए वह इतनी वेदना ओं के बावजूद वह जीवन की गति को पहचानता है, दुखों से हार नहीं मानता। वह मंजिल का नहीं राह का, तृप्ति का नहीं तृष्णा का कवि है-

कब बहुत सुनता है कहानी मेरी,
और फिर वह भी थी जवानी मेरी।
कर दिया जोड़ ने आजिज़ ग़ालिब,
नंगे- पीरी है, जवानी मेरी।।"22

निराला के लिए लिखते हुए 'आनंद प्रकाश दीक्षित' ने कहा है कि निराला की यह एक असमर्थता एक अभावग्रस्त व्यक्ति की दीन-हीन स्थिति का चित्र अवश्य है परंतु ऐसे व्यक्ति का चित्र नहीं है जो अपनी विवशताओं से जूझने से घबराकर आत्मसमर्पण कर देता है, टूट जाता है अथवा अपने स्वत्व और स्वाभिमान को भी भूल जाता है। निराला जीवन भर जितने आत्मसम्मानी बने रहे जिस अडिग तेजस्विता का परिचय उन्होंने दिया, उसे देखते हुए सरोज स्मृति में व्यक्त की गई विवशता और निराशा का इतना ही अर्थ रह जाता है कि उनकी दीनता अपनी पुत्री के अधिकाधिक विवर्धित गौरव की तुलना में ही दीनता किसी अन्य के प्रति निवेदित नहीं है, प्रार्थनात्मक नहीं है इसलिए वह पिता की ममता का उज्जवल आलोक विकिर्ण करती है।"23

सार रूप में यदि कहा जाए तो मिर्ज़ा ग़ालिब और निराला दोनों ही त्रासदी विषयक तुलना में एक दूसरे के पूरक हैं। दोनों को ही अपने जीवन से कुछ भी हासिल नहीं हुआ और अपनों की हृदय विदारक मृत्यु भी हुई, इतना ही नहीं खाने के लिए अन्य भी नसीब नहीं हुआ लेकिन फिर भी वह अपने ऊपर पड़े इन दुखों से परेशान नहीं होते बल्कि वह समाज को नव जीवन और नव जागृति का संदेश देते हैं, कुछ करने के लिए प्रेरणा देते हैं, और अपनी संपूर्ण शक्ति को केंद्रित कर समाज के समक्ष उठ खड़े होते हैं। अपने उस जीवन में भी अपना सर्वश्रेष्ठ दे जाते हैं जबकि जीवन जीने की परिस्थितियां भी उनके अनुकूल नहीं होती। वास्तव में उनके जीवन से हम सब यही सीख ले सकते हैं कि अंधकार के बादल आकाश में भले ही कितने ही छाए हो लेकिन उजाले के लिए सूर्य की महज एक किरण ही पर्याप्त है। कितना भी आकाश में बादल सूर्य को ढक लें पर जिस तरह से सूर्य आकाश पर आच्छादित होकर पुनः रश्मिरथारूढ हो अपना लक्ष्य संधान करता है ठीक उसी तरह इन कवियों ने हमें प्रेरणा दी कि जिंदगी में कितने भी संघर्ष हों, कितनी भी त्रासदियां हो, हमें उठ खड़े होना है और हमें जिंदगी में कभी भी हार नहीं माननी, जो भी देना है अपना सर्वश्रेष्ठ देना है।

संदर्भ-

1-अरस्तु (वाटर का संस्करण), पाइटिक्स,अध्यायxIV,पृष्ठ-52,प्रभात प्रकाशन,नई दिल्ली,संस्करण 1जनवरी2018।

2- नवल नंदकिशोर (सम्पादक), निराला:कवि छवि,पृष्ठ-145,प्रकाशन संस्थान,नई दिल्ली,प्रथम संस्करण-2004।

3- ग़ालिब,मिर्ज़ा असद उल्ला खां-दीवाने ग़ालिब,तब्रेज़ अहमद,पृष्ठ-29अकेडमी,नई दिल्ली,संस्करण 2001

4-नंदकिशोर नवल,सम्पादन, निराला:कवि छवि,प्रकाशन संस्थान, पृष्ठ-132 नई दिल्ली,प्रथम संस्करण 2004।

5- भारतीय धर्मवीर कुछ चेहरे कुछ चिंतन,पृष्ठ क्रमांक 35 वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली ,द्वितीय संस्करण-2006।

6- नवल नंदकिशोर ,सम्पादन, निराला:कवि छवि,प्रकाशन संस्थान, पृष्ठ-111 नई दिल्ली,प्रथम संस्करण-2004।

7- शर्मा रामविलास, निराला की साहित्य साधना, भाग 2 पृष्ठ 241, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली संस्करण 2009।

8- निराला; सूर्यकांत त्रिपाठी, संपादक- रामविलास शर्मा, राग विराग, पृष्ठ क्रमांक 2, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण 2004।

9-नवल नंदकिशोर ,सम्पादन, निराला:कवि छवि,प्रकाशन संस्थान, पृष्ठ-124 नई दिल्ली,प्रथम संस्करण-2004।

10-वही-71

11-वही-73

12-ग़ालिब,मिर्ज़ा असद उल्ला खां-दीवाने ग़ालिब,तब्रेज़ अहमद,पृष्ठ-34,अकेडमी,नई दिल्ली,संस्करण 2001।

13-वही,पृष्ठ-16।

14-वही,पृष्ठ-18

15-वही,पृष्ठ-21

16-वही,पृष्ठ-27

17- निराला, सूर्यकांत त्रिपाठी, परिमल (काव्य संग्रह) पृष्ठ क्रमांक 4, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली संस्करण 2008।

18-नवल नंदकिशोर ,सम्पादन, निराला:कवि छवि,प्रकाशन संस्थान, पृष्ठ-113 नई दिल्ली,प्रथम संस्करण-2004।

19- सुमन रामनाथ, ग़ालिब, पृष्ठ क्रमांक 159 भारतीय ज्ञानपीठ नई दिल्ली, संस्करण तीसरा 2009।

20-वही-21

21-वही-289

22- अब्बासी नूरनबी,नक़वी डाॅ नूरूलहसन, ग़ालिब;व्यक्तित्व और कृतित्व, पृष्ठ क्रमांक 151 शब्दकार प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2000।

23-नंदकिशोर नवल,सम्पादन, निराला:कवि छवि,प्रकाशन संस्थान, पृष्ठ-115, नई दिल्ली,प्रथम संस्करण-2004।